ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-E1	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Bhoor Singh Meena Mobile Number: _____

Medium (English/Hindi): Hindi Reg. Number: AWAKE-19 | F-24

Center & Date: Mukherjee Nagar (Delhi) UPSC Roll No. *(If allotted)*: 3811578

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: $125 \times 2 = 250$

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: $125 \times 2 = 250$

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।
   Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.
2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।
   To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.
3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।
   The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.
4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।
   If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।
   "The unexamined life is not worth living".
2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।
   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.
3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।
   The hands that serve are holier than the lips that pray.
4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।
   Religion without ethics is like a body without soul.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

खंड–A / SECTION –A

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

उम्मीदवार को
हाशिये में नहीं
चाहिये।
(Candidate mu
write on this m

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है, तो विकास की दिशा को बदलना होगा।"

विकास और विनाश दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं, परन्तु एक-दुसरे से जुड़े हुये हैं। जब मनुष्य अपने विकास की दौड़ मे कुछ सीमाओं का ध्यान नही रखता तो यह विकास उसके विनाश का कारण बन जाता है। जैसा कि किसी ने सत्य ही कहा-

"वर्तमान मानव अपने विकास की दौड़ मे इस तरह से आगे बढ रहा कि उसने विकास के वास्तविक मूल्यो को नजरअंदाज कर दिया है जो उसके भविष्य के विनाश का कारण बनेगा।"

इसी संदर्भ मे यदि विकास का विश्लेषण किया जाता है तो ~~वह~~ इसको एक बहुआयामी अवधारणा के रूप मे पाते है। विकास ~~विभिन्न~~ क्षेत्रो जैसे सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और राजनैतिक इत्यादि के मे समग्र स्थिति को बताता है। सामाजिक क्षेत्र मे समाज के सभी वर्गो को समान अवसर, सामाजिक सदभावना, सामाजिक संबंधो की मजबुत के साथ-साथ पुरुष-महिला

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समानता का होना सामाजिक विकास को बताता है। यदि सभी को निर्णय लेने का अधिकार, स्वतंत्रता और सत्ता में भागीदारी का समान अधिकार, लोकतंत्र की मजबूती के साथ-साथ राजनैतिक स्थिरता का होना राजनैतिक विकास को बताता है।

विकास की सबसे विस्तृत अवधारणा आर्थिक विकास को लेकर है, जिसके अंतर्गत किसी देश की अर्थव्यवस्था में निरंतर वृद्धि, लोगो का जीवन स्तर में सुधार, आय में वृद्धि के साथ-साथ अवसंरचनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता आर्थिक विकास को दर्शाती है। वही सांस्कृतिक विकास के रूप में अपनी प्राचीन सभ्यता, कला, संस्कृति, साहित्य आदि की निरंतरता और विकास, लोगो मे नैतिकता का होना। अनुशासन का समाज मे समावेश होना सांस्कृतिक विकास को बताता है।

इस तरह विकास की इस बहुआयामी अवधारणा में मानव इस ~~बहुत~~ विकास की ओर निरन्तर ~~आगे बढ़~~ आगे बढ़ता रहता है। परन्तु इसके

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

लिए वह ~~सम्बन्ध~~ प्राकृतिक एवं मानवीय दोनो संसाधनो का उपयोग करता है।

इस विकास प्रक्रिया मे मनुष्य अपनी नैतिकता, और मूल्यो को नजर अंदाज कर देता है तो समाज मे अपराध की नई प्रवृतियाँ जन्म लेती। राजनीति मे लोगो मे कर्तव्य विमुखता नजर आती है। संस्कृति का, प्रकृति का और पर्यावरण का विनाश होता नजर आता है।

वर्तमान विकास कुछ इसी प्रकार का है, वर्तमान मानव अपने विकास की दौड मे इस प्रकृति, पर्यावरण को भूल गया है। और भौतिकवादी जीवन हेतु इनका निरन्तर उपभोग कर रहा है। इसी विकास की दौड मे वनो की निरन्तर कटाई कर रहा, जीव-जन्तु का शिकार कर रहा है, बडे-बडे उद्योग-कारखाने लगाकर विभिन्न विनाशकारी जहरीली गैसो का सृजन कर रहा है। विकास की इस दौड ने प्रकृति को इस हद तक नुकसान पहुंचा दिया है। कि

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

यह विकास इसके लिए विनाश का कारण बन गया है। जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति अपना रूप दिखाना प्रारंभ कर दिया।

यही कारण है कि आज बाढ़, सूखा, सुनामी, भूकम्प, बादल का फटना, चक्रवात इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावृत्ति देखी गई है। जिसमे बड़ी मात्रा में जन-धन की हानि हुई। आज वर्तमान विश्व के समक्ष जलवायु परिवर्तन इसी विकास की अंधी दौड़ का परिणाम है, जिसके कारण आज वर्षा की अवधि में कमी हुई, इसकी तीव्रता बढ़ी, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्री स्तर बढ़ रहा है। विश्व की जैव-विविधता संकट में अनेक जीव-जन्तुओं की प्रजातियाँ विलुप्त हो गई और कई प्रजातियाँ अभी की विलुप्त होने की कगार पर है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र गड़बड़ा जाया है। जो मानव विकास में बाधा उत्पन्न करेगा।

आज के विकास से समाज, प्रकृति-पर्यावरण का पतन होना शुरू

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

हो गया। यदि भविष्य मे हमने विकास के वर्तमान तरीको को यदि नही बदला तो मानव का भविष्य संकट मे आ जाएगा और यहविकास विनाश का कारण बनेगा।

इसी स्थिति को स्थिति को ध्यान मे रखकर 1983 मे संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रुंटलैंड की अध्यक्ष मे एक समिति का गठन किया। और इस समिति ने 'हमारा साझा भविष्य' नाम से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसी रिपोर्ट मे विकास की वर्तमान अवधारणा से हटकर एक नई ~~परिभाषा~~ अवधारणा दी जिसे 'सतत विकास' कहा गया। इसका अर्थ 'ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओ की पूर्ति के दौरान भविष्य की पीढ़ी के संसाधनो पर हस्तक्षेप ना करे। अर्थात, संसाधनो का दोहन इस प्रकार से किया जाऐ जिससे भविष्य की मानवीय सभ्यता को बचाया जा सके।

इसी विकास की अवधारणा को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपना

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अपनाया और इसके लिए 'सतत विकास लक्ष्य' का प्रारंभ किया। इसके अंतर्गत 17 लक्ष्य और 169 उपलक्ष्यों को शामिल किया गया। ये सभी लक्ष्य विकास की नई अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए नजर आये। इन लक्ष्यों के अंतर्गत गरीबी का उन्मूलन, बेरोजगारी की समाप्ति, देशों के मध्य समन्वय एवं सहयोग, पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों को शामिल किया गया।

इन लक्ष्यों में पर्यावरण पर विशेष बल दिया गया। इसी प्रकार इसके विकास का नई तरीका अपनाया। कृषि के क्षेत्रों मे नई तकनीकों को अपनाकर परम्परागत कृषि पद्धति, जैविक कृषि को बल दिया जा रहा है जिससे मृदा की उर्वरता निरन्तर बनी रहे, ~~इससे~~ कृषि पर पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव ना पड़े और पर्यावरण की निरन्तरता बनी रहे।

इसी प्रकार औद्योगिक क्षेत्र मे नई तकनीकों को बनाकर दूषित गैसों का शुद्धीकरण कर, ~~इसके लिए~~

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सीमित संसाधनों का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके ऐसी ~~मशीनों~~ तकनीकों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

समाज मे हमे नैतिकता, मूल्यों को बढावा दिया जाए। विकास की दौड़ मे महिलाओ को भी शामिल किया जाए। विकास का लाभ समाज के सभी वर्गो को समानता के साथ मिले जिससे गरीबी एवं भुखमरी कम और समाज के अपराधिक प्रवृति पर अंकुश लगाया जाए।

राजनीतिक क्षेत्र मे जनता की भागीदारी बढाकर लोकतंत्र को मजबूत किया जाए। सरकारी सेवको को अपने कर्तव्यो एवं जिम्मेदारियो का भलीभाँति अनुसरण करना चाहिए। तकनीकी और नवाचार को बढाकर शासन मे पारदर्शिता एवं जवाबदेहिता को बढाया जाए।

विकास की इस दौड़ मे हम हमारे प्राचीन स्मारको, इमारतो, भवनो

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का भी ध्यान रखना चाहिए। लोगों को इनके महत्व के बारे में अवगत कराना चाहिए।

अतः इस प्रकार यदि भविष्य में हमें अपना वर्चस्व बनाये रखना है तो हमें अपने विकास के तरीकों को बदलना होगा और अब तक यह धारणा थी कि विकास और पर्यावरण को एक साथ लेकर नहीं चला जा सकता है इस धारणा का खंडन करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने एक भाषण में कहा -

" विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों को एक साथ लेकर चला जा सकता है परन्तु इसके लिए हमने अपने विकास के तरीकों को बदलना होगा, हमें अपना पैमाना बदलना होगा।"

विकास की इस बहुआयामी अवधारणा में हमें विकास के तरीकों को बदलना होगा और अपना पैमाना परिवर्तित करना होगा। इस हेतु हमें चाहे पर्यावरण, प्रकृति, समाज और

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सभ्यता हो हमे इनके संरक्षण को नजर अंदाज किये बिना अपना विकास करना होगा।

पर्यावरण के संरक्षण हेतु वनीकरण बनाना, जैवविविधता की सुरक्षा को प्रोत्साहन देना होगा। पर्यावरण और मानव के इस सुसाहृय संबंध की निरन्तरता को बनाये रखा जाये तथा ~~इसका~~ इसका संरक्षण किया जाऐ।

अतः निष्कर्ष कहा जा सकता है कि विनाश और विकास मे नकारात्मक संबंध है यदि विकास अपने नकारात्मक तरीके से किया तो विनाश निश्चित है। इसलिए हमे विकास की विधि को बदलना होगा ~~वरि~~ नही तो विनाश निश्चत है जैसा कि श्रीकृष्ण ने 'भागवतगीता' मे कहा कि

" प्रकृति और नारी का जब - जब विनाश, अपमान होगा। तब-तब सम्पूर्ण मानवता का विनाश होगा।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

   "The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

   The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

   Religion without ethics is like a body without soul.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सभी धर्मशास्त्रों के अनुसार इस सृष्टि की रचना ईश्वर ने की है। इसी प्रकार भारतीय हिन्दु धर्म की अवधारणा के अनुसार इस सम्पूर्ण ~~ब्रह्मांड~~ ब्रह्मांड ~~की~~ का सृजनकर्ता ब्रह्मा को माना जाता है। धरती इसी ब्रह्मांड का ~~भाग~~ भाग है। इस धरती मे सम्पूर्ण जीव-जन्तु, पेड़-पौधे और समस्त पर्यावरण आता है। मानव भी इसी धरती का अंग है।

पृथ्वी (धरती) के सभी जीवो मे मानव सबसे शक्तिशाली है, क्योंकि वह विवेकशील और तर्कशील है। इसलिए इस सम्पूर्ण पृथ्वी की समस्त प्रजातियो की सुरक्षा करना मानव का कर्तव्य है। और मानव केवल संरक्षक के रूप मे कार्य करेगा ना कि स्वामी के रूप मे। अर्थात मानव प्रकृति की समस्त चीजो का उपभोग अपनी इच्छानुसार नही बल्कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार ही करेगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ईश्वर द्वारा निर्मित इस धरती में समस्त जीव जन्तु, पेड-पौधे, और मानव आते हैं। परन्तु इनमे मानव विवेकशील होने के कारण निरन्तर अपना विकास करना चाहता है। अपने विकास हेतु लगातार प्रयासरत रहता है।

इसी विकास की दौड मे मानव इस धरती के समस्त संसाधनो का उपयोग करता है। जिससे वह पृथ्वी का स्वामी के रूप मे उभरकर सामने आता है।

आज के विकास की दौड में मे मानव ने इन प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग अपनी इच्छानुसार किया जिससे इस प्रकृति का विनाश होने लगा। मानव ने अपने विकास मे जो मार्ग के पेड पौधे काटे, जीव-जन्तुओ एवं खनिज संसाधनो का अंधाधुंध तरीके से अपने विकास के उपयोग किया परिणामस्वरूप पृथ्वी के अन्य जीव अपने जीवन को बचाने मे असमर्थ होने लगे।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जिस मानव को ईश्वर द्वारा इस धरती की रक्षा के लिए विवेकशीलता प्रदान की वही विवेकशीलता आज की विनाश का कारण बन रही है। चूंकि मानव इस सृष्टि का संरक्षक है इसलिए उसे इसका संरक्षण करना चाहिए।

वर्तमान भौतिकवादी युग में मानव अपने इस दायित्व को भूल गया है यदि हम अपने प्राचीनकालीन इतिहास पर नजर डाले तो पायेंगे कि मानव इस सृष्टि का संरक्षक था। वह पेड़-पौधो की पूजा करता था। पशुओ और जीव-जन्तुओ का पालन-पोषण करता। इनको शक्ति का प्रतीक मानता। पवित्र उपवन की अवधारणा से वनो और वन्य जीवो का संरक्षण करता। ये सभी कार्य वह मानव होने के नाते करता। परन्तु इस विकास दौर में मानव जैसे जैसे अपने विकास की ओर आगे बढता चला गया वह अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर इस सृष्टि का स्वामी बनने की कोशिश करने लगा। तथा इसे अपने अधीन मानकर इसका अपनी इच्छानुसार उपयोग-दोहन करने लगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवा
हाशिये म
चाहिये।
(Candid
write on

इससे ईश्वर की धरती का विनाश नजदीक आने लगा। इस हेतु ईश्वर ने इस मनुष्य को सबक सिखाने हेतु समय-समय पर प्राकृतिक आपदाओं के रूप में धरती की भयानकताओं से मानव को अवगत कराया। और सूखा-बाढ़, ~~ज्वालामुखी~~, सुनामी एवं भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से मानव को उसके ~~कर्त~~ वास्तविक कर्तव्य को याद दिलाने की कोशिश करता रहा।

परन्तु इस भौतिकवादी युग मानव इतना लालची ~~व~~ एवं स्वार्थी हो गया कि उसे प्रकृति की इस स्थिति का भान ही नही होता, और वह निरन्तर इसका उपभोग कर रहा है। इसलिए मनुष्य को अपने कर्तव्य पर ध्यान देते हुऐ इस पृथ्वी का संरक्षण करना चाहिए।

चूंकि मानव इस प्रकृति का एक विवेकशील प्राणी है और इस प्रकृति का संरक्षण करना उसका कर्तव्य है। इस हेतु मानव ने अब धीरे-धीरे ~~अपनी~~

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

जाग्रति नजर आ रही। उसे अपने कर्तव्य का भान होने लगा क्योंकि प्रकृति अपना भयानक रूप निरन्तर मनुष्य को दिखा रही है। इसी संदर्भ मे मानव इस पृथ्वी को संरक्षण करने हेतु प्रमुख प्रयास सन् 1992 मे ब्राजील के रियो डी जेनेरियो शहर मे पृथ्वी सम्मेलन के दौरान किया। इसमे मानव ने माना कि यदि उसे विकास करना है तो, प्रकृति, धरती को साथ मे लेकर चलना होगा। उसका नजरअंदाज नही किया जा सकता। इसके बाद सभी देशो ने पृथ्वी की सुरक्षा हेतु विभिन्न कार्यक्रमो कानूनो का निर्माण किया।

इसी संदर्भ मे भारत ने अपने यहाँ पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1972, जल संरक्षण अधिनियम, मृदा संरक्षण अधिनियम, वन्य जीव संरक्षण अधिनियम बनाया और पृथ्वी के संरक्षण मे निरन्तर प्रयास किया।

इसी प्रकार वर्तमान मे भी कुछ विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कार्यक्रमों के माध्यम से अपने कर्तव्य का पालन कर रहे है।

हमें इस बात का ज्ञान होना जरूरी है कि इस प्रकृति का यदि हमने संरक्षण नही किया तो फिर इसको कौन बचायेगा। ईश्वर तो इसको बचाने नही आयेगा क्योंकि ईश्वर ने इसका संरक्षण का दायित्व मानव पर सौंपा है इस हेतु मानवता के नाते इस सृष्टि के समस्त जीवों का संरक्षण, पालन पोषण का दायित्व हमारा है। इसी बात का ध्यान में रखकर हमें निरन्तर कर्तव्य निभाना चाहिए।

अतः निष्कर्षत कहा जा सकता है कि मानवता अर्थात मानवीय गुण, उसकी नैतिकता, उसकी विवेकशीलता इस पृथ्वी की संरक्षक है। मानवीयता के नाते सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे और सृष्टि की निरन्तरता में हमें सहयोग करते रहना चाहिए। साथ ही अपनी मानवीयता को केवल अपने स्वार्थ के लिए ही उपयोग नही करते

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

रहना चाहिए। सच्ची मानवता ~~स्वार्थ~~ स्वार्थरहित, परोपकारिता पर आधारित होती है इसी का अनुसरण करते हुए ~~हमें~~ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

यदि मानव इसकी (प्रकृति) ~~अनु~~ अनुभूति यदि स्वामी के रूप में करेगा तो वह इसका दोहन करेगा। इसका विनाश होगा। इसलिए मानव को इस बात का ~~भलीभांति~~ भलीभांति ज्ञान होना चाहिए कि उसे इस प्रकृति का केवल संरक्षण सौंपा है और उसे संरक्षक का ही काम करना चाहिए।

इस प्रकार मानव प्रकृति के समस्त प्राणियों के प्रति सद्भावना रखकर उनके विकास, पोषण के भागीदार रहना चाहिए। क्योंकि जब तक मानव अपना कर्तव्य करता रहेगा वह स्वयं का भी विकास कर सकेगा अन्यथा इस प्रकृति के साथ साथ उसका भी विनाश हो जाएगा। क्योंकि प्रकृति और मनुष्य में 'सुसम्बद्ध' सम्बंध है। इसके अनुसार प्रकृति मनुष्य के बिना भी अपना ~~[illegible]~~

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम है परन्तु मनुष्य प्रकृति के बिना अपना अस्तित्व खो जाता है।

उम्मीदवार
हाशिये में
चाहिये।
(Candida
write on

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation